अध्याय - 12

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवेः प्रार्थना करें और अपने दल और इस पाठ्यक्रम को परमेश्वर को समर्पित करें कि वे प्रभु के लिए अनेक चेले बना सकें।

2.	**गवाही बाँटना** (20 मिनट)	***[शान्त समय]*** **युहन्ना 11:38 - 14: 31**

बारी-बारी पढ़े और वचन बाँटे, (या अपने नोट्स में से पढ़ें) संक्षेप में वही बोले जो आपने परमेश्वर के साथ जो वचन आपको दिया गया था (युहन्ना 11: - 14:31) तक) उससे अपने निजि समय में जो भी आपने सीखा है, उसे सब के साथ बाँटें।
जो भी गवाही बाँट रहा है उसे गम्भीरता से सुनें और ग्रहण करें। जो वह बाँट रहा है उस पर बहस न करें।

3.	**याद करना** (20 मिनट)	***निश्चितता*** **मसीही निश्चय के पदों का पुनरावलोकन**

क. याद किए पदों का पुनरावलोकन.

पिछले याद किए बाइबल पदो का पुनरावलोकन करें जिन में निम्न भाग हैं।

1. पुनरावलोकनः

पुनरावलोगन का अर्थ है दिन में एक बार दुबारा से पिछले 5 पदों को देखना। बार-बार बाइबल के पदों को पढ़ना सबसे अच्छा तरीका है उन्हें याद करने का। और फिर दोबारा से उनको सही से बोलना। इसलिए पिछले 5 पदों को को आपने सीखे हैं उनको 5 दिन तक दिन में 1 बार ज़रूर दोहराएँ। इस तरह से आप हर पद को 35 बार दोहरा लेते हैं इससे पहले कि आप उसे पिछले पुनरावलोकन के स्थान पर छोड़ देते हैं।

2. पिछला पुनरावलोकनः

इसका अर्थ है उन वचनों को हर तीन हफ्ते बाद देखना जो आपने अतीत में बाइबल में से याद किए थे। यह सर्वोत्त्म तरीका है पुराने पदों याद रखने का। इसलिए पिछले 100 दिनो में जो पद आपने याद किए हैं उन में से 5 पदों का हर दिन पुनरावलोकन करें। इस रीति से आप इन सारे पदों को जो आपने याद किए हैं उनको हर तीन हफ्ते बाद फिर से देख लेते हैं कि वे आपको याद हैं या नहीं।

3. साथ ले कर चलनाः

अपनी याद करने की पुस्तिका या कार्ड सदा साथ लेकर चलें। जब आप काम पर जाने की यात्रा कर रहे हैं तो दिन के उस समय को उन वचनों का पुनरावलोकन करने के लिए का उपयोग करें। और उस समय पर पिछली अन्य पदों पर भी नज़र डाले कि वे पद आपको याद हैं या नहीं। उस समय में आप 3 पदों में क्या लिखा है उन पर मनन करके प्रार्थना भी कर सकते हैं।

2. जाँच लेः

एक दूसरे की जाँच कर के देखें कि आप को अभी भी बाइबल के पहले याद किए वचन याद हैं। हर बार दल की सभा में दल को दो-दो लोगों के दल में बाँट कर जाँच करें कि सब को बाइबल के वचन याद हैं। और फिर कभी कभी बाइबल के पिछले 5 पदों की भी इसी तरह से जाँच करें। एक दूसरे की जाँच करें कि जान लें कि आप को सभी पद याद हैं। इसकी भी जाँच कर लें कि क्या आपको वचन के साथ-साथ उस वचन का विषय और उससे जुड़ा सन्दर्भ वचन भी याद हैं या नहीं। साथ ही यह कि आपको बाइबल का पूरा पद बिना कोई भूल किए याद है या नहीं। जाँचने के लिए कभी-कभी एक संकेत देकर जैसे कोई विषय देकर, या बाइबल का संदर्भ वचन देकर या फिर कभी-कभी पद के पहले कुछ शब्द देकर देखें कि सब को पद याद हैं या नहीं।

ख. दो-दो कर के मसीही निश्चय के पदो का पुनरावलोकन करें

1. उद्धार निश्चित है - युहन्ना 10:28 2. प्रार्थना के उत्तर निश्चय - युहन्ना 16:24 6. विजय निश्चित है - 1 कुर. 10:13	4. क्षमा निश्चित है - 1 युहन्ना 1:9 5. मार्गदर्शन निश्चित है - नीतिवचन 3:5-6

4.	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट)	***जीवन के विषय में प्रश्न*** **मैं कैसे फलवन्त बनूँ? युहन्ना 15:1-17**

बाइबल अध्ययन के पाँच कदम का तरीका इस्तेमाल करके युहन्ना 15:1-17 का अध्ययन करें।

पहला तरीका - पढ़े **परमेश्वर का वचन**

पढ़ेः युहन्ना 15:1-17 एक साथ पढ़ें।

आईए हम मिल कर बारी बारी से एक वचन पढ़ें जब तक पूरा लेखाँश समाप्त न हो जाए।

दूसरा तरीका - खोजें **अवलोकन करें**

ध्यान देः यहाँ पर कौन सा लेखाँश आप के लिए महत्त्वपूर्ण है?

या ऐसा कौन सा सच है इस लेखाँश में जिस ने आपके दिल को छू लिया है?

लिख लेः लेखाँश में से एक या दो सत्यों को खोज निकालें। उनके विषय में सोचें और अपने विचार अपनी कापी में लिख दें।

गवाही बाँटेः (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और कापी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।

(नीचे कुछ लोगों के उदाहरण दिए गए हैं जिन्होंने अपने विचार बाँटे थे कि उन्होंने क्या पाया था। पर याद रहे हर छोटे दल में लोग अलग-अलग बातें बाँटते हैं। पर यह ज़रूरी नही है कि सब के विचार एक समान हो।)

15:5

<u>खोज 1. मसीह में बने रहने का महत्त्व</u>

"यदि कोई व्यक्ति मुझ में बना रहता है और मैं उस में तो वह बहुतायत से फल लाएगा। परन्तु मुझ से दूर होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते हो।**"**मैं ऐसा व्यक्ति बनना चाहता हूँ जो परमेश्वर के लिए बहुत सा फल ला सके। यह पद मुझे बताता है कि यह तभी हो सकता है जब मैं यीशु में बना रहूँ और यीशु मसीह मुझ मे बने रहें। कटु सत्य तो यही है कि यीशु मसीह के बिना मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूँ जो सदा के लिए महत्त्वपूर्ण हौ। कई बार यह सत्य मुझे डरा देता है क्योंकि मैं एक मसीही हूँ जो कि बहुत ही चुस्त और क्रियाशील है। अब मैं स्वयं से प्रश्न करता हूँ कि क्या जो कुछ भी मैं करता हूँ क्या वह परमेश्वर के लिए ऐसा फल लाएगा जो सदा के लिए महत्त्वपूर्ण होगा? मैं तो केवल लगातार यह विश्वास कर सकता हूँ कि जब तक मैं यीशु मसीह में बना रहूँगा और यीशु मसीह मुझ में बना रहेगा, जो कुछ भी मैं करुँगा वह परमेश्वर के लिए अनन्तकाल के लिए फलवन्त होगा। मैं ऐसे किसी दिन की खोज नहीं करना चाहूँगा जब मैं यीशु मसीह के साथ कार्यशील रहा हूँ पर फलवन्त नहीं हुआ हूँ।

15:8

<u>खोज 2. परमेश्वर की महिमा करने का महत्त्वः</u>

"यह तो मेरे पिता की महिमा के लिए है कि तुम फलवन्त हो, यह दिखाता है कि तुम मेरे चेले हो।**"**मैं भी अपने जीवन के द्वारा परमेश्वर की महिमा करना चाहता हूँ। और परमेश्वर की महिमा करने के लिए ज़रूरी है कि मैं बहुत सा फल लाऊँ। और बहुत सा फल लाने के लिए मुझे यीशु में बने रहना ज़रूरी है और यह कि वह मुझ में बना रहे। यह मुझ पर स्पष्ट हो चुका है कि एक मसीही का सब से बड़ा लक्ष्य है कि वह परमेश्वर की महिमा करें। सो मसीही जीवन में दो चीज़ों का होना बहुत ज़रूरी है और वह है लगातार यीशु मसीह से और उसकी फलवन्त होने की शक्ति से सम्बन्ध बनाए रखना।

<u>तीसरा तरीकाः</u> **समझाना**

ध्यान देः इस लेखाँश में कौन सा ऐसा प्रश्न है जो आप इस दल से पूछना चाहेंगे?

आईए हम कोशिश करें कि युहन्ना 15:1-17 के सभीसत्यों को समझ सके और प्रश्न पूछें उस सब के विषय में जो अब तक समझ नहीं आया है।

लिख लेः अपना प्रश्न पूरी स्पष्ट रीति से पूछें और उसे अपनी कापी में लिख लें।

गवाही बाँटेः (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और कापी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।

विचार-विमर्श करेः (फिर इन में से कुछ प्रश्न चुन कर उन के उत्तर पर दल के साथ मिल कर विचार-विमर्श करें और उनका उत्तर खोजने की कोशिश करें।)

नीचे प्रश्नों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं जो विद्यार्थी पूछ सकते हैं और साथ ही कुछ नोट्स भी हैं जिन पर विचार विमर्श किया गया था।)

15:1-17

<u>प्रश्न 1. युहन्ना 15:1-17 क्या है? क्या वह एक सीधी शिक्षा है या एक दृष्टान्त है? या फिर क्या यह केवल अर्थ का एक प्रतीक है?</u>

लिख लेः एक सीधी शिक्षा का उदाहरण युहन्ना 14:15-27 में लिखा है।

एक दृष्टान्तका उदाहरण लूका के 10:30-35 में लिखा है। दृष्टान्त तो इस पृथ्वी की एक कहानी है जिस का एक स्वर्गीय अर्थ होता है। दृष्टान्त का केवल एक मुख्य संदेश होता है। उदाहरण के लिए भले सामरी के दृष्टान्त का मुख्य संदेश है कि "आपका पड़ोसी वही है जिस पर आप दया दिखाते हैं।"

बाइबल में फल के अर्थ के प्रतीक के अनेक उद्हरण है युहन्ना 10:1-16 और युहन्ना 15:1-17 अर्थ का प्रतीक अतिरिक्त तुलना के प्रसंग पाए जाते हैं। जैसे अर्थ के प्रतीक हम दाखलता और डालियाँ है और माली परमेश्वर पिता हैं। दाखलता यीशु मसीह है और डालिया जो फलवन्त है वे सच्चे मसीहों का प्रतीक हैं। और जो डालिया फलवन्त नहीं होती है वे नाम के वास्ते मसीहों का या फिर अविश्वासी लोगों का प्रतीक हैं। क्योंकि दाखलता और डालियाँ लोगों का प्रतीक हैं तो पहले फल भी लोगों का ही प्रतीक हैं। अर्थ का प्रतीक यह नहीं कहता है कि वास्तव में यीशु मसीह दाखलता है और हम उसकी डालियाँ है और उस पर अंगूर लगे हैं। यह केवल यह बताती है कि यीशु मसीह और लोगो का रिश्ता दाखलता और और उसकी डालियों के समान है। हमें अर्थ के प्रतीक के हर चिन्ह को समझने की ज़रूरत नहीं है। (अर्थ का प्रतीक)

15:2

<u>प्रश्न 2. उस फल का चारित्रिक गुण क्या हो जो मसीहों में फलवन्त होना चाहिए?</u>

नोट्सः शब्द "फल" के बाइबल में अनेक अर्थ हैं।

1. कुलुसियों 1:6 कहता है, वे फल जो सुसमाचार के प्रचार से उत्पन्न होते हैं और वे हैं नए विश्वासी

2. युहन्ना 15:16 "अनन्त काल का फल"जो कि परिपक्व मसीही (विश्वासी) हैं। ये वे विश्वासी है जो परिपक्व हो चुके हैं और जो फिसल कर गिरने वाले नहीं हैं। वही "अनन्तकाल के फल" हैं।

3.. लूका 3:8-14 कहता है फल वह है जो भले कामों के पश्चाताप् से मिलता है। (इफिसियों 2:10)

4. गलातियों 5:22-23"आत्मा के फल"यह मसीही चरित्र का दूसरा पहलू है।

इसलिए जिस फल की मसीह को आशा है वह यह है कि मसीहों को सुसमाचार केप्रचार से पाए फल। (नए विश्वासी) उस फल को जो चेले बनाता है (अर्थात परिपक्व मसीही विश्वासी) भले कामों के फल (अर्थात मसीही कर्म) और पवित्र आत्मा के फल (अर्थात मसीह के चरित्र के लोग)

15:2

<u>प्रश्न 3. काटना-छाँटना किस बात का प्रतीक है?</u>

लिख लेः जहाँ एक ओर परमेश्वर मरे हुओं और उन्हें जो फलवन्त नहीं है उनको अन्तिम न्याय के समय काट डालेगा। अर्थात वे जो अविश्वासी हैं (मत्ती 13:41)लेकिन वह उनको जो जीवित है और जिनकी फलवन्त डालियाँ हैं उनकी काट-छाँट करेगा। यहाँ काट-छाँट का अर्थ है उनको डाँटेगा, उनको अनुशासन में रहना चाहेगा, और उनको मुशकिलों और विरोधियों से निबटना सिखाएगा। यह इस बात का प्रतीक है कि विश्वासियों को इन मुश्किलों के द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे वे बदल जाएं और तब अधिक फलदायक बन जाएँ।

15:3

<u>प्रश्न 4. वह कौन सा शब्द है जिसने चेलों को शुद्ध किया था?</u>

नोट्सः वह शब्द जिसके द्वारा चेले शुद्ध हो गए थे सुसमाचार का वह शब्द है जिसने उनकी नये जन्म के और न्याय के

लिए अगुवायी की थी। (पढ़ें याकूब 1:18; 1 पतरस 1:23) और यह मसीही शिक्षा का वचन है जो उनको उनकी शुद्धता की ओर ले जाता है। (इफिसियों 5:26)

15:4-5

<u>प्रश्न 5. वे कौन लोग हैं जो फलवन्त होते हैं?</u>

पद 4 में हम पढ़ते हैं, **"**मुझ में बने रहो और मैं तुम में बना रहूँगा। कोई डाली मेरे बिना स्वयं फलन्त नहीं हो सकती है;उसे दाखलता में बने रहने की ज़रूरत है। तुम तब भी फलवन्त नहीं हो सकते हो जब तक तुम मुझ में न बने रहो।**"**वे लोग जो फलवन्त होते हैं ये वे लोग हैं जो यीशु मसीह के निकट रहते हैं और उसे अपने दिल और जीवन में स्थान देते हैं और जो लगातार प्रतिदिन मसीह से सम्बन्ध बनाए रखते हैं। क्योंकि परमेश्वर उन में बसा रहता है इसलिए वे चौकस रहते हैं तथा सावधानी और परिश्रम से फलवन्त होते रहते हैं।

15:6

<u>प्रश्न 6. वे कौन लोग हैं जो फलवन्त नहीं होते हैं?</u>

नोट्सः इसके अर्थ का प्रतीक दाखलता के विकास का वर्णन नहीं करता कि अतीत में जिसकी एक हरी-भरी डाली थी जिस पर फल लगे थे जो बाद में मर गई और उसके फल सूख गए और तब वह एक ऐसी डाली बन गई थी जिस पर फल नहीं थे और वह काट डाली गई थी। इस प्रतीक का अर्थ है एक ऐसी दाखलता का वर्णन देता है जिसकी दो तरह की डालियाँ थीं एक जो जीवित और फलवन्त थी और दूसरी जो मरी हुई थी जिस पर कोई फल नहीं थे। और यह प्रतीक इस मरी हुई डाली के इतिहास का कोई वर्णन करती है। हम में से किसी को भी यीशु की इस तस्वीर के साथ अपने विचार या प्रश्न नहीं जोड़ने चाहिए।

वे डालियाँ जो फलवन्त हैं वे सच्चे विश्वासियों को दर्शाती हैं। लेकिन जो डालियाँ फलवन्त नहीं है वे उनको नहीं दर्शाती हैं जो पहले विश्वासी थे पर बाद में विश्वास से दूर चले गए थे। ये डालियाँ जो फलवन्त नहीं है इस बात को सिखाती हैं कि जो डालियाँ काट कर आग में झोंक दी जाती हैं वह वे विश्वासी है जो जीवित नहीं हैं। (अर्थात जो मन से यीशु मसीह से जुड़े नहीं हैं।) और जो पहले भी कभी भी फलवन्त नहीं हुए थे उस समय भी नहीं जब वे मसीह के साथ निकटतम सम्बन्ध रखे थे। हालाँकि एक समय था जब वे कलीसिया के साथ मसीह के निकट थे परन्तु मन से वे कभी भी मसीह के निकट नहीं थे। वे कभी भी सच्चे विश्वासी नहीं थे। उनका मसीह से निकट सम्बन्ध तो था परन्तु वह केवल बाहरी था। उनका सम्बन्ध कभी भी नया जन्म लेने वाले मसीही का नहीं था। (युहन्ना 3:3-8) इस प्रतीक के अर्थ का निषकर्श यह नहीं सिखाता है कि नया जन्म पाया हुआ विश्वासी अपने उद्धार को खो सकता है। इस शिक्षा को मान लेना सीधे-सीधे मसीह की शिक्षा का विरोध करता है जो उसने युहन्ना 5:24 और 10:28 पद में दी है। बाइबल कभी भी विरोधी शिक्षाएँ नहीं देती हैं।

प्रतीक के रूप में यह सिखाती है कि नाम के वास्ते मसीही सदा फल रहित रहेगा, जब कि नया जन्म पाया मसीही अनेक फल लाएगा। इस लिए जो लोग फलवन्त नहीं होते हैं वे मसीह के निकट तो आते हैं पर उसे ग्रहण नहीं करते हैं। उनका मसीह के साथ केवल एक बाहरी रिश्ता होता है। वे मसीही कलीसिया में भाग लेते होंगे और उनके कार्य में भी हिस्सा लेते होंगे। लेकिन मसीह उनके अन्दर नहीं बसता है। वे कोई भी ऐसा फल नहीं ला सकते हैं जो अनन्तकाल के लिए महत्त्वपूर्ण हो। यीशु मसीह जोर देकर हर मसीही को जो उसके निकट आता है ज़िम्मेदारी देता है पर यदि कोई उसके वचन का और उस ज्योति का जो उसने पाई है तिरस्कार करता है तो एक समय आएगा जब परमेश्वर उसके साथ कोई भी काम करना बन्द कर देगा। पवित्र आत्मा उसके लिए विनती नहीं करेगा और उसकी अन्तरआत्मा उसे सावधान नहीं करेगा और उसका दिल कठोर बन जाएगा। और अन्त में उसका ऐसे तिरस्कार होगा कि उसे नरक की आग में फैंक दिया जाएगा। (यशायाह 6:9-10; मत्ती 13:11-15;इब्रानियो 3:7-11) इस बात से प्रकट होता है कि उस

व्यक्ति ने कभी भी नया जन्म नहीं पाया था।

मसीह के दूसरे आगमन से पहले आज के युग का मसीही समाज, परमेश्वर के राज्य का एक भाग होने के नाते आप के आज के रूप में सच्चे मसीहों और सामान्य मसीहों का एक मिला-जुला समाज है। (मत्ती 13:24-30, 36-43) ये सामान्य मसीही दिखने में सच्चे और वास्तविक मसीही लोगों के समान ही दिखाई देंगे। पर अपने दिलों में वे ऐसे जीते हैं जैसे उनका नया जन्म नहीं हुआ है। उदाहरण के लिए ऐसे भी सामान्य मसीही है जो बोलेंगे और व्यवहार तो ऐसे करते हैं मानो वे सच्चे मसीही हैं (मत्ती 7:21-22) पर वे तो खत-पतवार हैं जो गेहूँ की बालों के समान दिखाई देते हैं। (मत्ती 13:24-30, 47) वे सूखी और फल के बिना डालियाँ होती हैं। मानों वे दाखलता का ही भाग हैं। (युहन्ना 15:1-6) वे तो भेड़ों के झुँड एक हिस्सा हैं जो उठता है कि सत्य को बिगाड़ सके और चेलों को अपने पीछे भटका कर दूर ले जा सके। (प्रेरितों के काम 20:29-31) वे झूठे प्रेरित हैं जो किसी अन्य यीशु का प्रचार करते हैं। उनके पास कोई दूसरी आत्मा है और वे बाइबल से अलग किसी अन्य सुसमाचार की घोषणा करते हैं। (2 कुर. 11:4, 13-15) वे झूठे भाई हैं जो घुसपैठ बन कर कलीसिया की सच्चाई को बिगाड़ना चाहते हैं। (गलातियों 1:6-9; 2:4-

ये वे लोग है जिन पर प्रकाशन हुआ है, या जिन का बपतिस्मा हुआ है, और शायद इन्होने प्रभुभोज में हिस्सा लिया हो और सुसमाचार का प्रचार किया हो और प्रभु के लिए बड़े-बड़े काम देखें हैं या संक्षेप में यह हो सकता है कि वे वह सब कर रहे हों जो पवित्र आत्मा कर रहा था। और फिर भी बाद में प्रभु से दूर जा रहे थे। वे तो हर बार यीशु को फिर से क्रूस पर चढ़ाते हैं और यीशु को लोगों के बीच में शर्मिन्दा करते हैं। और फिर जब उनके जीवन में काँटे ही निकलते हैं तब वे श्राप के खतरे से गुज़रते हैं। तब वह वही प्रकट करते हैं जो वे हैं न कि एक जीवित डाली। अन्त में वे एक सूखी डाली के समान आग में झोंक दिए जएँगे। (इब्रानियो 6:4-8) केवल ऐसे ही लोग जब सच में नया जन्म लेंगे तभी वे पूरी क्षमा पाएँगे। (इब्रानियो 8:10-12)

15:5,7

<u>प्रश्न 7. मसीह में बने रहो, इसका क्या अर्थ है?</u>

नोट्सः पद 7 में हम पढ़ते हैं, **"**मसीह में बने रहने का अर्थ है मसीह के वचनों में बने रहना।**"**और 9-10 पद कहते हैं, **"**मेरे प्रेम में बने रहो.....और मेरी आज्ञाओं का पालन करो।**"**सो मसीह में बने रहने का अर्थ जुड़ा है मसीह की आज्ञाओं का पालन करने से। हालाँकि मसीह पहले मसीहों से बोलते हैं, और वह पहले हर मसीही पर प्रेम प्रकट करते हैं, इस लिए हर मसीही की ज़िम्मेदार है कि वह मसीह के प्रेम और आज्ञाओं का प्रतिउत्तर दे। उसे कोशिश करते रहना है कि वह मसीह से एक निजि रिश्ता बनाए रखे और निरन्तर उसकी आज्ञाओं का पालन करे। हर मसीह को पूरी कोशिश करके जो कुछ यीशु मसीह सिखाते हैं उससे प्रेम करना चाहिए। उसे कोशिश करनी चाहिए कि वह यीशु मसीह से अपने पूरे दिल, मन और शक्ति से प्रेम करे। और उसे यह भी कोशिश करनी चाहिए कि वह उस काम को करे जो यीशु मसीह करने के कहते हैं। जब भी कोई व्यक्ति सोचता है कि वह एक मसीही है लेकिन यीशु मसीह से प्रेम नहीं करता है और न ही उसक आज्ञाओं को मानता है तब वह एक सूखी डाली बनने के खतरे में है जिसका तिरस्कार किया जाएगा और उसे आग में झोंक दिया जाएगा।

15:7

<u>प्रश्न 8. "मसीह का वचन विश्वासियों में बने रहना और विश्वासी का मसीह के वचनों में बने रहने में क्या अन्तर है।"</u>

नोट्सः युहन्ना 8:31-32 हमें सिखाता है कि यीशु मसीह के सच्चे चेले बाइबल के साथ कुछ करते हैं। ये चेले सदा वचनों (शिक्षाओं) में बने रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि विश्वासी वचनों को सुनने, पढ़ने, अध्ययन करने मनन करने,

याद करने और उसे लागू करने (पालन करने) के प्रति ज़िम्मेदार हैं। और वे बाईबल के वचनों को दूसरों तक पहुँचाते हैं।

युहन्ना 15:7 हमें यह सिखाता है कि बाइबल के वचन सच्चे चेलों के साथ कुछ करते हैं। मसीह के वचन सच्चे चेलों मन में बने रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि विश्वासियों की ज़िम्मेदारी है कि वह मसीह के वचनों को उनके विचारो को प्रभावित कर के नियन्त्रण में रख कर उन्हें अपने इरादों और इच्छाओं, व्यवहार और भावनाओं के साथ उनके बोलने और व्यवहार के प्रति एक धारणा बना सके। संक्षेप में यीशु मसीह के शब्द (वचन) चोलों में परिवर्तन ला लके।

15:7

प्रश्न 9. वचनों और प्रार्थना के बीच क्या सम्बन्ध है?

नोट्सः पद 7 कहता है, **"**यदि मेरे वचन तुम में बने रहेंगे तो जो कुछ भी तुम माँगोगे वह तुम्हें दे दिया जाएगा।**"**जब एक विश्वासी यीशु मसीह के वचनों से स्वयं को प्रभावित होने देता है और उन्हें स्वयं के जीवन को नियन्त्रण मे रखने देता है तब उसकी प्रार्थनाएँ प्रभावशाली होंगी। क्योंकि तब वह ऐसा कुछ भी नही माँगेगा जो यीशु मसीह के वचनों के विरुद्ध होगा। और उसे अपनी प्रार्थाओं के लिए बहुत से उत्तर मिलेंगे। 1 युहन्ना 5:14) यह तो एक बड़ा वायदा है।

15:8

प्रश्न 10. वचन और प्रार्थना कितनी मात्रा में परिपूर्ण होंगे?

नोट्सः 5 और 8 पद के अनुसार मसीहों से आशा की जाती है कि वे फल लाएँ। इसी लिए परमेश्वर उन को काटता-छाँटता है। (युहन्ना 15:2) जब परमेश्वर किसी मसीही को काटते-छाँटते हैं तब वे उन्हें डाँटते हैं, सुधारते हैं, और कठिनाइयों के साथ उनको अनुशासन में लाते हैं। फिर 16 पद के अनुसार मसीहों से आशा की जाति है कि वे अनन्तकाल के फल लाएँ। इसी लिए परमेश्वर और अन्य विश्वासियों ने नए विश्वासियों की देख-रेख की थी, क्योंकि वे नहीं चाहते है कि वे फिर से पुराने अविश्वास के जीवन की ओर लौट जाएँ। मत्ती 13 में लिखे बीज बोने वाले(किसान) के दृष्टान्त के अनुसार कुछ मसीही 100 गुना, कुछ 60 गुना और कुछ 30 गुना फल लाते हैं। कुछ मसीही दूसरों से अधिक फल लाते हैं इसके नीचे दिए 3 कारण हैः-

1. वे परमेश्वर के वचन के प्रति परिश्रमी, वे भरोसा करने वाले, वफादार, सावधानी से लगातार कोशिशों से प्रतिउत्तर देते रहते हैं।
2. वे अपने सुसमाचार के प्रचार में अधिक फलदायक होते हैं। वे दूसरे मसीहों से अधिक चेले बना लेते हैं।
3. उनको भिन्न-भिन्न तरह के व्यक्तित्व दिए गए हैं और अलग-अलग तरह के आत्मिक वरदान भी जो जीवन की उन परिस्थितियों के लिए हैं जो परमेश्वर ने ही दी हैं। और इन सब का देने वाला केवल परमेश्वर है वो ही एकमात्र जज है।

15:9-12

प्रश्न 11. मसीही लोग कैसे एक दूसरे से प्रेम कर सकते हैं?

नोट्सः पद 1. से 11 कहते हैं, **"**मसीह और उसके प्रेम में बने रहो।**"**और पद 12-17 कहते हैं,
"एक दूसरे से प्रेम रखो.**"**
इस लिए यह एक योजना है कि मसीही लोग एक दूसरे से तभी प्रेम कर सकते हैं जब वे मसीह में और उसके प्रेम में बने रहेंगे। केवल तभी जब मसीही लोग लगातार पूरी कोशिश से मसीह की शिक्षाओ का पालन करेंगे तभी यीशु मसीह उनको योग्यता देगा कि वे एक दूसरे से प्रेम कर सकें। मरकुस 12:30-31में यीशु मसीह ने यह आज्ञा दी थी कि मसीही

लोग एक दूसरे से प्रेम करें और यह भी आज्ञा दी कि वे अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखें। लेकिन रोमियो 5:5 परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा मसीहों के दिलों मे प्रेम उँडेला है। जब परमेश्वर किसी बात के लिए आज्ञा देते हैं तो वह उसे करने के लिए योग्यता भी दते हैं। परमेश्वर प्रेम करने की आज्ञा देते हैं पर वे अपना प्रेम भी प्रदान करते हैं।

15:10,14

<u>प्रश्न 12. आज्ञाकारी होने ओर प्रेम के बीच क्या सम्बन्ध है?</u>

लिख लेः व्यवहारिक रूप से मसीह में बने रहने या उसके प्रेम में बने रहने और मसीह की दोस्ती में बने रहने का अर्थ है उसकी आज्ञाओं का पालन करना। लेकिन हमारी आज्ञाकारिता पहले नहीं आई थी। सबसे पहले यीशु मसीह परमेश्वर की विश्वासियों को बचाने की योजना के प्रति आज्ञाकारी हुए थे। यीशु मसीह ने पहले हम से प्रेम किया और हमारे लिए मारे गए थे। फिर यीशु मसीह ने किसी को सुसमाचार का प्रचार करने भेजा था। जब हम ने विश्वास कर लिया तब उसने पवित्र आत्मा को और अपने प्रेम को हमारे दिलों पर उँडेला था। अब जब मसीह का प्रेम हमारे दिलों में है हम चाहते हैं कि हम मसीह की आज्ञाओं का पालन करें। और हम मसीह की आज्ञाओं का पालन कर सकते हैं और हम मसीह की आज्ञाओं का पालन ज़रूर करेंगे।

मसीह की आज्ञाओं का पालन करने के कारण यीशु मसीह हमारे दिलों में उसके प्रति और भी प्रेम उँडेल देते हैं। और इस तरह से एक बेहतर प्रेम करने का चक्र चालु हो जाता है। हमारा प्रेम आज्ञाकारिता की ओर ले जाता है। और हमारा यह प्रेम देख कर यीशु मसीह हमारे दिल में और अधिक प्रेम उत्पन्न करता है। और तब हमारा अधिकाई का प्रेम अधिक आज्ञाकारिता की ओर ले जाता है और यह सब चलता ही रहता है।

15:13

<u>प्रश्न 13. महान प्रेम का क्या अर्थ है?</u>

नोट्सः पद 12-13 में हम पढ़ते हैं, **"**मेरी आज्ञा यही है, एक दूसरे से वैसा ही प्रेम रखो जैसे मैं ने तुम से किया है। इससे बड़ा कोई प्रेम नहीं है कि कोई किसी मित्र के लिए अपनी जान दे दे।**"** सबसे महान प्रेम यही है कि कोई अपने मित्रों के लिए अपनी जान दे दे। यीश मसीह ने हम से ऐसा ही महान प्रेम किया था और उसने हमारे लिए क्रूस पर अपनी जान भी दी थी। उसका प्रेम निस्वार्थ था। वह तो निज का बलिदान देने वाला प्रेम था। यह वह प्रेम था जिसने हमें बचा लिया है। यह वह प्रेम है जो वैसा बना देता है जो हम स्वयं से नहीं बन सकते हैं और यही सर्वोत्तम प्रेम है। यही महानतम प्रेम है।

और अब यीशु मसीह आज्ञा देते हैं कि मसीही लोग एक दूसरे से ऐसा ही महानतम प्रेम रखें। मसीहों को एक दूसरे से निस्वार्थ प्रेम करना चाहिए जो निज का बलिदान करने को तैयार हो, और वे सदा ऐसे ही प्रेम के साथ दूसरों की सहायता करें कि वे परमेश्वर और लोगों के सामने आपका सर्वोत्तम प्रेम माना जाए। यह सच है हम क्रूस पर दूसरों के लिए अपना जीवन नहीं दे सकते हैं पर हम अपना जीवन एक निस्वार्थ रूप से निज का बलिदान दे कर जी सकते हैं। यही वह महानतम प्रेम है।

15:16

<u>प्रश्न 14. प्रार्थना और फलवन्त होने में क्या सम्बन्ध है?</u>

नोट्सः 16 पद में हम पढ़ सकते हैं, **"**मैं ने तुम को चुना है और तुम्हें नियुक्त किया है ति तुम फलवन्त हो और तब जो भी तुम मुझ से मेरे नाम से माँगो उसे पिता मेरे नाम से तुम्हें दे देगा।**"**एक सच्चा मसीही फल के लिए फ्रार्थना करेगा और उस प्रार्थना के उत्तर में फलवन्त हो जाएगा। जब यीशु मसीह मसीहों के भेजते हैं कि जा कर अनन्तकाल

तब हम जान लेते हैं कि हम वह केवल उसी की सामर्थ, बुद्धि-ज्ञान और प्रेम के द्वारा कर सकते हैं। इस लिये हम मसीहों को हिम्मत और आज्ञाकारिता के लिए प्रार्थना करनी चाहए जिससे हम लोगों के पास जाकर उसकी सामर्थ, ज्ञान और प्रेम से उनकी सहायता कर सकें जिससे वे अन्तकाल के फल बन जाएँ। यीशु मसीह का वायदा है कि वे प्रार्थना करें और अनन्त फल पाने के लिए कार्य करें और वह उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा।

चौथा तरीका **लागू करना**

ध्यान देनाः इस लेखाँश में कौन से ऐसे सत्य है जो मसीही लोग अपने जीवन में लागू कर सकते हैं? **विचार बाँटें और लिख ड़ण**आईए हम एक दूसरे के दिमाग में तूफान ला दें और उन सब सच्चाईयों को लिख कर रख लें जो हमें युहन्ना 15:1-17सेजीवन में लागू करनी हैं।

ध्यान देः कौन सी ऐसी बात हमें लागू करनी है जो परमेश्वर चाहते है कि हम निजि रूप से अपने जीवन में लागू करें?

लिख ले:यह निजि लागू करने का सत्य जो आप अपने जीवन मे लागू करने वाले है उसे अपनी कापी पर लिख लें। अपने इस निजि चुनाव को दूसरों के साथ बाँटें।

(याद रहे हर व्यक्ति भिन्न सत्य का चुनाव कर सकता है या किसी सत्य को अन्य रीति से अपने जीवन पर लागू कर सकता है। नीचे कुछ उदाहरणों की सूची है।

1. उदाहरणों की सूची जो युहन्ना 15:1 – 17 से कायल होने के बाद लागू किए जा सकते हैं।

15:1 यह जान लें कि यीशु मसीह के इलावा कोई और उद्धारकर्ता नहीं है। वही सच्ची दाखलता है

15:2 माली, अर्थात परमेश्वर पिता को अनुमति दें कि वह आप को निरन्तर का-छाँटता रहे जिससे आप अधिक अनन्तकाल तक रहने वाले फल उत्पन्न कर सकें।

15:3 सुसमाचार पर विश्वास रखें और विश्वास द्वारा न्याय पाएँ। मैं बाइबल के और अधिक वचनों पर विश्वास करता हूँ जिससे मेरा जीवन के और अधिक भाग धर्मी और पवित्र बन जाएँ।

15:4-5 याद रखे कि जब आप मसीह के साथ लगातार एक जीवन सम्बन्ध बनाए रखते हैं और यीशु मसीह आप में बसे रहते हैं तभी आप अनन्त काल के फल उत्पन्न कर सकते हैं।

15:6 उन लोगों की सहायता करें जो कलीसिया में नए आए हैं कि वे यीशु मसीह को अपने दिल और जीवन में कबूल करें (2 कुर. 13:5)

15:7 बाइबल के वचनों को अपने जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करने दें कि वे मुझे बदल डाले और मुझ पर नियन्त्रण रखे।

15:7 इस बात को जान लें कि परमेश्वर के लिए दो महत्त्वपूर्ण परिस्थितियाँ हैं जब वह प्रार्थनाओं के उत्तर देता है पहला कि हमारा यीशु मसीह के साथ एक जीवित सम्बन्ध हो और दूसरा कि हम बाइबल के वचनो को हमारे जीवन पर नियन्त्रण करने दें।

15:8 जान लें कि एक चेले का यही गुण है कि वह फलवन्त होगा। और वह सदा इस बात के लिए समर्पित रहेगा कि वह मसीह के लिए फलदायक हो।

15:9-10 लगातार उसके वचनों का पालन करके यीशु मसीह के साथ प्रेम के सम्बन्ध में बने रहें।
(युहन्ना 14:21,23)

15:11 इस संसार में मसीही आनन्द विजय और खुशी का नतीजा नहीं होता है वरन उस आनन्द का कारण तो यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध और बाइबल वचनो का पालन करने, और प्रार्थनाओं का उत्तर पाने से होता है।

15:13 अधिक प्रेम दिखाएँ कि आप अपने जीवन को अपने मित्र के लिए बलिदान कर दें।

15:14 यीशु मसीह की आज्ञाओं को मान कर उसका का मित्र बन जाएँ। (याकूब 4:4)

15:15 उन बातों को जो हम ने यीशु मसीह से सीखी हैं अपने मित्रों के साथ बाँट लों।

15:16 इसका बीड़ा उठाएँ कि दूसरे लोगों तक और दूसरे राष्ट्रों तक जाएँ और यीशु मसीह के चेले बनाएँ। (मत्ती 28:18-20)

15:16 विश्वास करें कि जब मैं एक महान मिशन को पूरा करने में लगा हूँ (मत्ती 28:18-20) तो मसीह मेरी अनेक प्रार्थनाओं के उत्तर देगा।

2. निजि रूप से युहन्ना 15:1 – 17 की सही धारणा को लागू किया जाना।

मैं परमेश्वर से उसका अनुग्रह माँग रहा हूँ कि मैं उसके साथ एक निजि सम्बन्ध स्थापित कर सकूँ और उसे और अधिक बढ़ा सकूँ। मैं चाहता हूँ कि उसके साथ हर दिन और अधिक समय बिता सकूँ। जिससे उसके वचन को पढ़ कर उस पर मनन कर सकूँ कि कैसे उनका पालन कर सकता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि मसीह के वचनों का पालन करने से मैं मसीह के लिए और अधिक प्रेम और भरपूरी की ओर बढ़ चलूँगा।

मैं परमेश्वर से उसका अनुग्रह माँग रहा हूँ जिससे मैं और अधिक फलवन्त हो सकूँ और ऐसे फल ला सकूं जो अनन्तकाल तक बने रहें। मसीह ने मुझे बचाया है और मुझ को एक हरी और दाखलता की एक जीवित डाली बनाया है। उसका ही जीवन पवित्र आतमा बन कर मुझ में बहता है और यह ही मेरे जीवन को फलवन्त बनाएगा। मेरी इच्छा है कि मैं बहुत सा फल लाऊँ। मैं ऐसा फल चाहता हूँ जो लम्बे समय तक बना रहें। इसलिए मैं लगातार यीशु मसीह की आज्ञाओं का पालन करने, प्रार्थना और उसके अन्य बच्चों से प्रेम करने के दवारा उससे अपना निजि सम्बन्ध विकसित करता रहूँगा।

पाँचवाँ तरीका प्रार्थना करो	**प्रतिक्रिया**

आईए हम एक सत्य के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें युहन्ना 15:1-17में हमें सिखाया है। (अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें कि बाइबल अध्ययन के दौरान आपने क्या सीखा है? और केवल एक या दो वाक्यों में ही प्रार्थना करें। और याद रखे कि दल के अन्यलोग भिन्न विषयों में बात करेंगे।)

5.	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***मध्यस्थता*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

निरन्तर 2 या 3 लोगों के दल बना कर एक दूसरे के लिए और संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करे

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को घर पर तैयारी का काम करने के लिखित रूप से दे दें।

1.समर्पणः किसी एक सत्य के प्रति जो आपके लिए सम्भव है स्वयं को समर्पित कर दे।

2.परमेश्वर के साथ निजि समयः युहन्ना **15:1 – 18:27** अध्यायों में से हर दिन आधे अध्याय का अध्ययन करें। और इसका अध्ययन करने के लिए अपने मनपसन्द सत्य का तरीका इस्तेमाल करें।

3.मुँह जुबानी याद करना अपनी यह आदत बना लें कि हर दिन बाइबल के 5 वचनो जो आपने पिछे दिनों में याद किए थे उनकी जाँच करें कि वे याद हैं या नहीं।

4. प्रार्थनाः इस सप्ताह किसी विशेष विषय पर प्रार्थना करें और देखें परमेश्वर इस सप्ताह आपके लिए क्या कर रहे हैं। (भजन 5:3)

5. अपनी सपताह के नोट्स की कापी को पूरा करें। आपने कितने नए चेले बनाए हैं उनकी सूची पूरी करें। अपने नोट्स में परमेश्वर के साथ अपने निजि समय में आपने क्या सीखा है उसे भी जोड़ लें। जो वचन आपने याद किए हैं उनको भी लिख लें। साथ ही आपके बाइबल अध्ययन के नोट्स भी जोड़ लें। यही आपकी तैयारी गिनी जाएगी।